सफलता की कहानी

किसान का नाम – कादे टुडू
ग्राम – लावकेशरा
पंचायत – मेढ़िया
प्रखंड – मुसाबनी
जिला – पूर्वी सिंहभूम

मुसाबनी प्रखंड अन्तर्गत मेड़िया पंचायत के लावकेशरा गांव निवासी कादे टुडू एक प्रगतिशील सुअर पालक है। तीन भाईयों में बड़ा होने के कारण परिवार का जिम्मेदारी इन्हीं के कन्धों पर है। परंपरागत खेती के साथ देशी नस्ल के सुअर पालन करते है। पशुपालन में इनका विशेष अभिरूचि है। सुअर के अलावे बकरी पालन कर अपना अति रिक्त आय का स्रोत को अनवरत बनाये हुए है।

प्रखंड के आत्मा कर्मी ने कादे टुडू को सुअर पालन का प्रशिक्षण लेने के लिए कहा। कादे टुडू को बताया गया कम समय में व्यवसायिक तौर पर सुअर पालन आमदनी का अच्छा स्रोत हो सकता है।

आत्मा संस्थान की ओर से आयोजित सात दिवसीय Skill Training of Rural Youth (STRY) कार्यक्रम अन्तर्गत सुअर पालन विषय पर प्रशिक्षण के बारे में जानकारी दी गई। यह प्रशिक्षण भारत सरकार के स्किल इंडिया प्रोग्राम के तहत मैनेज हैदराबाद एवं समेति रांची के संयुक्त तत्वाधान में किया गया था। दिनांक 07 से 13 जनवरी 2019 तक पूर्वी सिंहभूम जिला के कृषि विज्ञान केन्द्र में प्रशिक्षण का आयोजन किया गया । आत्मा कर्मी के सुझाव से कादे टुडू ने प्रशिक्षण में भाग लिया। इस सात दिवसीय प्रशिक्षण सत्र में कृषि विज्ञान केन्द्र के विशेषज्ञों द्वारा विस्तार से प्रतिभागियों को सुअर पालन की तकनीकी जानकारी दी गई। कादे टुडू पूर्व से ही सुअर पालन से जुड़े थे। प्रशिक्षण प्राप्त करने एवं वैज्ञानिकों के सपंर्क में आने के बाद काफी प्रोत्साहित हुए एवं सुअर पालन को बड़े पैमाने पर करने का मन बनाया।

प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद कादे टुडू ने सुअर पालन हेतु आधुनिक तरीके से सुअर शेड का निर्माण किया। कादे टुडू ने मात्र 02 सुअर का बच्चा खरीदा कर व्यवसायिक रूप से सुअर पालन का शुरूआत किया । इनके पास अभी 8 बड़े सुअर है जिसमें 07 मादा 01 नर है। सुअर पालन से 50–60 से अधिक का आमदनी कादे टुडू को हो रहा है।

वैश्विक महामारी Covid-19 के दौरान जब राज्य में संपूर्ण लॉकडाउन लगाया गया, रोजगार के सारे स्रोत बंद हुए तक भी कादे टुडू के घर से ग्राहक सुअर खरीद कर ले जाते रहे । एक ओर जहाँ लॉकडाउन की स्थिति में बाहर मजदूरी करने गये सभी मदजूर काम छोड़कर अपने घर की ओर भागे–भागे आने लगे वहीं कादे टुडू अन्यत्र रोजगार की तलाश में न जाकर अपने ही घर से सुअर पालन कर स्वयं तो रोजगार प्राप्त किये ही दूसरे अन्य किसानों को भी सुअर पालन के लिए प्रोत्साहित भी कर रहे है।

Latitude: 22.501257
Longitude: 86.464708
Elevation: 122.58 m
Accuracy: 5.6 m
Time: 24-04-2023 15:01
Note: laukeshelra
Powered by NoteCam